सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

स्टाफ क्लब

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

CSIR-IHBT
INDIA
1983
उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब
Innovation Hub for Better Tomorrow

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 19 **अंक 2** **15 अगस्त 2025**

आमुख

स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" 2025 का दूसरा अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है, कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए भी प्रविष्टियां देते रहें, ताकि मंथन के आने वाले अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: धर्म सिंह

संकलन: जसबीर सिंह

विशेष साभार: पवित्र गाइन (कवर चित्र)

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	बेजान बेजोड़ नहीं होता – जब कंक्रीट कंक्रीट के सीने में भी दिल धड़कता है	मीनाक्षी	03
2.	बेटे बस बेटे नहीं रहते	मीनाक्षी	05
3.	टेक्नोलॉजी और महिलाएं : बदलते युग की नई पहचान	मीनाक्षी	06
4.	सिराज की साँझ	मीनाक्षी	08
5.	नारी तेरे रूप अनेक	अवनेश कुमारी	10
6.	15 अगस्त: स्वच्छता का महोत्सव भी	जगदीप सिंह	11

<u>हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के परिवार के बच्चों की कृतियाँ</u>

Dvangana Gain	13
Deeptanshu Gain	14
Arkita Kumari	15
Bhavika Gupta	16
Neharika Gupta	17
आकर्ष पाण्डेय	18
Shrnya Saini	19
Sarvik Saini	20

बेजान बेजोड़ नहीं होता – जब कंक्रीट के सीने में भी दिल धड़कता है

हर दिन जब मैं अपनी खिड़की से बाहर देखती हूँ, तो एक ही चीज़ दिखती है – कंक्रीट की ऊँची दीवारें, सड़कें, पुल, और इमारतें। कभी-कभी लगता है कि ये दुनिया सिर्फ मशीनों, सीमेंट और ईंटों की बन गई है – जहाँ संवेदनाएँ मरती जा रही हैं, और स्पर्श अब स्क्रीन तक सिमट गया है। लेकिन क्या वाकई ऐसा है?

एक दिन की बात है। बारिश हो रही थी। मैं ऑफिस जा रही थी, भीगते हुए एक फ्लाईओवर के नीचे से गुज़र रही थी। तभी मेरी नज़र एक कोने पर पड़ी – जहाँ कंक्रीट की दीवार के पास एक छोटा सा बच्चा भीगता हुआ बैठा था, उसके हाथ में भीगा हुआ स्केचपैड था और उसपर उसने जो चित्र बनाया था, उसमें एक इमारत थी – लेकिन उसके ऊपर लाल रंग से एक बड़ा दिल बना हुआ था।

मैं ठिठक गई। उस दिल ने मुझे अंदर तक छू लिया।मैंने उससे पूछा, "तुमने ये दिल क्यों बनाया इमारत पर?"

उसने मुस्कुराकर कहा, "क्योंकि मेरी माँ यहीं सफाई करती हैं... और मैं जानता हूँ, जब वो मुस्कुराती हैं, ये बिल्डिंग भी मुस्कुराती है। जब वो रोती हैं, तो ये दीवारें भी गीली हो जाती हैं।" उस छोटे से जवाब ने मुझे भीतर तक हिला दिया। उस एक पल में मुझे एहसास हुआ – कि बेजान चीज़ें भी जज़्बात की वाहक बन सकती हैं, अगर हमारी नज़र उन्हें उस तरह से देखना सीखे।

कंक्रीट सिर्फ एक निर्माण सामग्री नहीं है – ये हमारे समय, मेहनत, रिश्तों और संघर्षों की गवाह है। उस स्कूल की दीवार पर पहला नाम लिखते हुए बच्चों की खुशी हो, या पुराने मकान की दीवार पर लगी वो दरार जो माँ की कमी को चुपचाप बताती है – इन सबमें भावनाएँ बसती हैं। हर इमारत, हर पुल, हर सड़क – किसी न किसी का सपना, संघर्ष या प्रेम उसमें बसा होता है। कोई पिता दिन-

बेजान बेजोड़ नहीं होता – जब कंक्रीट के सीने में भी दिल धड़कता है

रात मज़दूरी करता है ताकि उसका बच्चा उस बिल्डिंग के स्कूल में पढ़ सके। कोई माँ रात की शिफ़्ट करती है ताकि उस अस्पताल की दीवारों के भीतर किसी को नई ज़िंदगी मिल सके।

बेशक, कंक्रीट के पास दिल नहीं होता। लेकिन जब उसमें इंसान की मेहनत, पीड़ा और प्रेम बस जाते हैं – तो वो भी धड़कने लगता है।और शायद यही सबसे सुंदर बात है – कि हम इंसान, जहां भी जाते हैं, वहां संवेदना का रंग छोड़ आते हैं... फिर चाहे वो किसी का चेहरा हो या एक ठंडी दीवार।

कभी यूँ भी देखो – दीवारों के उस पार भी कोई धड़कता है। और शायद... वो तुम ही हो।

मीनाक्षी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
पर्यावरण प्रौद्योगिकी प्रभाग

बेटे बस बेटे नहीं रहते

कल तक जो मुँह फुलाकर , रूठ जाया करते थे,
आज वही बेटे, खामोशी से सब सह जाते हैं।

माँ की गोद में सिर रखकर, नींद में मुस्कराने वाले,
अब ऑफिस की थकान, तकिये के नीचे दबा देते हैं।

जो बहन से लड़कर, राखी की मिठाई छीनते थे,
अब वही बेटे, राखी वाले दिन फोन तक नहीं उठा पाते।

बचपन में जो, दूध पीने के बहाने माँ से लिपटते थे,
अब चाय में शक्कर ना होने पर, कुछ कह भी नहीं पाते।

बेटा होना —शायद सबसे कम समझा गया रिश्ता है।
जिसे मर्द बनने की जल्दी में, माँ-बाप, समाज, और ज़िंदगी —सबने चुप रहना सिखा दिया।

ना थकने की इजाजत, ना रोने की छूट,
बस देना... निभाना... सहना।

हाँ, बेटियाँ पराई होती हैं...
पर बेटे भी तो, कभी-कभी अपने ही घर में अजनबी हो जाते हैं।

मीनाक्षी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
पर्यावरण प्रौद्योगिकी प्रभाग

टेक्नोलॉजी और महिलाएं : बदलते युग की नई पहचान

"अगर एक महिला को सशक्त बनाना है, तो उसे ज्ञान और तकनीक की शक्ति दीजिए।"

वर्तमान समय में टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को बदलकर रख दिया है — शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, कृषि, घरेलू कार्य, संचार, सुरक्षा और शोध। लेकिन इस परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली धुरी बन रही हैं महिलाएं। आज की महिलाएं सिर्फ तकनीकी उपकरणों की उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि वे नवाचार की वाहक, निर्माता और संचालक भी हैं।

भारत में महिलाओं की डिजिटल भागीदारी में पिछले कुछ वर्षों में बड़ा बदलाव देखा गया है:

- राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन (NDLM) के अनुसार अब तक 2.5 करोड़ से अधिक महिलाएं डिजिटल साक्षरता प्राप्त कर चुकी हैं।एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की 33% इंटरनेट उपभोक्ता महिलाएं हैं, जो 2017 में मात्र 19% थीं।
- सरोजा देवी (तमिलनाडु) जैसे उदाहरण सामने आए हैं जिन्होंने स्मार्टफोन के जरिए अचार और पापड़ बेचने का ऑनलाइन व्यापार खड़ा किया और अब 300 महिलाओं को रोजगार दे रही हैं।
- मेधा देवी (झारखंड) ने Krishi Vigyan Kendra की मदद से सोलर ड्रायर और मोबाइल आधारित कृषि सलाह को अपनाया। उन्होंने जैविक सब्जियों की खेती शुरू की और आज गाँव की 40 महिलाओं को ट्रेनिंग दे रही हैं। पहले जहाँ उन्हें सालाना ₹30,000 की आय होती थी, आज वही ₹3 लाख तक पहुँच चुकी है।
- eNAM (Electronic National Agriculture Market) और mKisan मोबाइल सेवा जैसी योजनाएं महिलाओं को कृषि में बाजार और जानकारी दोनों दे रही हैं।

महिलाएं अब देश की तकनीकी शक्ति का नेतृत्व कर रही हैं:

- डॉ. रितु करिधाल – ISRO की सीनियर वैज्ञानिक, जिन्हें "रॉकेट वूमन ऑफ इंडिया" कहा जाता है, चंद्रयान मिशन में अग्रणी भूमिका।
- डॉ. टेसी थॉमस – "मिसाइल वूमन ऑफ इंडिया" के नाम से प्रसिद्ध, DRDO में इंटरसेप्टर मिसाइलों की परियोजना निदेशक।

आंकड़ा: भारत सरकार के अनुसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अब 28% तक पहुँच चुकी है, जो एक दशक पहले मात्र 14% थी।

टेक्नोलॉजी और महिलाएं : बदलते युग की नई पहचान

"अगर एक महिला को सशक्त बनाना है, तो उसे ज्ञान और तकनीक की शक्ति दीजिए।"

"साइबर सखी अभियान – महाराष्ट्र"

यह योजना ग्रामीण महिलाओं को साइबर अपराधों से बचाव, डिजिटल पहचान की सुरक्षा, और सुरक्षित सोशल मीडिया उपयोग के बारे में प्रशिक्षित करती है। अब तक 1000 से अधिक महिलाएं साइबर सखी बन चुकी हैं जो अपने गाँवों में डिजिटल जागरूकता फैला रही हैं।

कुछ महत्त्वपूर्ण आँकड़े:

क्षेत्र	महिलाओं की भागीदारी	स्रोत
डिजिटल बैंकिंग	53%	RBI रिपोर्ट 2023
STEM शिक्षा (UG level)	43%	AISHE रिपोर्ट 2022
स्टार्टअप्स में फाउंडर	18%	Startup India डेटा 2024
साइंस रिसर्च फेलोशिप	24%	DST - WISE रिपोर्ट 2023

भविष्य में AI, डेटा एनालिटिक्स, हेल्थ टेक, ग्रीन टेक्नोलॉजी, स्पेस रिसर्च, और रोबोटिक्स जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की अधिक भागीदारी सुनिश्चत करने के लिए:

- तकनीकी शिक्षा में लैंगिक संतुलन बढ़ाया जाए।
- इंटरनेट व स्मार्टफोन तक पहुँच, ग्रामीण महिलाओं के लिए और सरल हो।
- महिलाओं के लिए नवाचार केंद्र (Innovation Hubs) स्थापित किए जाएं।

टेक्नोलॉजी अब कोई विलासिता नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुकी है। और जब महिलाएं तकनीक से जुड़ती हैं, तो न केवल वे स्वयं सशक्त बनती हैं, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र को भी एक नई दिशा देती हैं। आज आवश्यकता है कि हम "डिजिटल बहनों" को प्रेरित करें, उन्हें आगे बढ़ाएं और तकनीकी समावेशन को स्त्री-शक्ति से जोड़ें।

"जब महिलाएं तकनीक को अपनाती हैं, तब समाज विकास की असली गति पकड़ता है।"

मीनाक्षी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
पर्यावरण प्रौद्योगिकी प्रभाग

सिराज की साँझ

बरसात बस पानी नहीं लाती,
इस बार वह आसमान से गिरे आँसू बनकर आई थी।
सिराज के आँगन में कोई सन्नाटा उतर आया था,
जैसे धरती ने खुद को लपेट लिया हो — आँचल की तरह।

मिट्टी फिसली नहीं थी,
वह अपनी गोद में कई सपनों को दफ़्न कर चुकी थी।
जहाँ कल तक हल चलता था,
वहाँ आज सिर्फ़ सन्नाटा और मलबा बोलता है।

एक माँ की रसोई — जो कभी रोटियों की ख़ुशबू से महकती थी,
आज उस जगह बस टूटी दीवारें हैं,
और चूल्हे पर जली राख में
बची रह गई है यादों की गरमाहट।

किसी बच्ची की किताबें, जो बारिश से भीगकर गल गईं,
अब उन पन्नों में भविष्य की लकीरें धुंधली हो चुकी हैं।
खिलौनों की जगह मलबे का ढेर है,
और आँखों में सवाल: "क्या हम फिर से मुस्कुरा पाएँगे?"

वहीं, उस टूटे गाँव के छोर पर,
एक सात साल की बच्ची —
गीले कम्बल में लिपटी, चुप बैठी थी।

सिराज की साँझ

उसकी आँखों में आँसू नहीं थे,
क्योंकि शायद वह अब समझ चुकी थी
कि रोने के लिए कोई कंधा नहीं बचा।

माँ चली गई थी — चूल्हे संग,
पिता मलबे के नीचे सो गए थे,
और दादी की चुन्नी मलबे के ऊपर अकेली फड़फड़ा रही थी।

पर वो बच्ची...
अब भी एक गुड़िया को सीने से चिपकाए बैठी थी,
जैसे उसकी साँसों में सबका नाम दर्ज हो।

घाटियाँ चुप हैं, और पहाड़ भी भारी हो गए हैं,
जैसे उन्होंने भी अपनी चुप्पी से शोक मनाना सीख लिया हो।
कहीं दूर मंदिर की घंटी अब भी टनकती है —
पर अब वह प्रार्थना नहीं, विलाप है।

पर... वहीं बीच मलबे से उठती एक पुकार है —
एक नौजवान, जो किसी बुज़ुर्ग को सहारा दे रहा है।
एक औरत, जो अपने आँचल से
किसी अनाथ बच्चे के आँसू पोंछ रही है।

सिराज टूटा है — पर हारा नहीं।
उसके खेतों ने पानी पी लिया है, पर बीज अभी भी ज़िंदा हैं।
उसकी मिट्टी में अब भी पुनर्जन्म की नमी है।
और उसकी हवाओं में अब भी
"हम फिर खड़े होंगे" की गूँज है।

यह कविता सिराज के उन हर घर को समर्पित है जो मलबे में दब गए,और उस बच्ची को भी — जिसने सब कुछ खोकर भी, अपनी आँखों में उम्मीद की लौ बचा रखी है। क्योंकि हम बहे नहीं हैं... हम बहादुर हैं।

मीनाक्षी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
पर्यावरण प्रौद्योगिकी प्रभाग

नारी तेरे रूप अनेक

जन्म लिया पिता घर बेटी कहलाई।
भाई की बहन कहलाई।
खेली कूदी पली बढ़ी।
हर आज्ञा का पालन कर ।
पढ़ लिख आत्मनिर्भर हुई ।
तो ब्याह कर ससुराल आई ।
बहू और पत्नी कहलाई ।
हर फर्ज़ निभाया ।
अपनी पहचान बना घर वालों का मान बढ़ाया ।
यहीं सफ़र खत्म नहीं हुआ पहचान बदलने का ।
अभी और कई रूप लेने हैं बाकी ।
जन्म दिया संतान को और माँ कहलाई ।
माँ के रूप ने उसकी दुनियाँ ही बदल डाली ।
अब बस वो दिन रात एक ही दुआ देती है कि ।
मेरी औलाद को कोई दुःख छू ना सके ।
अगर आये कोई दुःख उसके जीवन में ।
तो मैं ढ़ाल बन उससे लड़ जाऊँ ।
अगर टकराए कोई मुझसे तो मैं आँधी बन उसे मिटाऊं ।
माँ हूँ मैं कैसे हार जाऊं मैं कैसे हार जाऊं ।
उतार चढ़ाव जीवन का हिस्सा हैं ।
ये आते और जाते रहेंगे।
कभी ख़ुशी है तो कभी गम ।
ए जीवन तेरे रूप हैं अनेक ।
नारी तेरे रूप अनेक ।
माँ का रूप है सबसे श्रेष्ठ सबसे श्रेष्ठ ।

अवनेश कुमारी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (3)

15 अगस्त: स्वच्छता का महोत्सव भी

हर वर्ष 15 अगस्त को हम भारत की स्वतंत्रता का पर्व बड़े ही सम्मान और गर्व के साथ मनाते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है उन वीरों की, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें आज़ादी दिलाई। लेकिन क्या सच में हम उस भारत का निर्माण कर पा रहे हैं, जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था? स्वतंत्र भारत की असली पहचान सिर्फ झंडा फहराने या भाषण देने में नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक बनने में है। और जिम्मेदारी शुरू होती है **"स्वच्छता और कचरा प्रबंधन से"**।

कचरा प्रबंधन क्यों:-भारत एक विशाल देश है, और हर दिन लाखों टन कचरा उत्पन्न होता है। यदि हम इसे सही ढंग से नहीं निपटाते, तो यह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, बीमारियाँ फैलाता है, और हमारे शहरों व गाँवों की सुंदरता को नष्ट करता है। स्वच्छ भारत मिशन इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। लेकिन यह मिशन तभी सफल हो सकता है जब हर नागरिक इसे अपनी जिम्मेदारी समझे।

इसी कड़ी मैं आइये आपको कचरा प्रबंधन पर एक उदाहरण पेश करता हूँ:
- स्वच्छता की ओर एक सशक्त कदम स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा की प्रेरणादायक पहल स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा ने, जिन्होंने स्वच्छ भारत अभियान को मजबूती से अपनाते हुए अपने यूनिट की रसोई से निकलने वाले जैविक कचरे का समाधान स्वयं करना शुरू किया है। स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा का यह निर्णय एक प्रेरणास्पद उदाहरण है जहाँ दूसरों पर निर्भर हुए बिना, उन्होंने खुद ही अपने कचरे का प्रबंधन करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। इसके लिए उन्होंने हमारे द्वारा विकसित किए गए विशेष उत्पाद कम्पोस्ट बूस्टर का उपयोग शुरू किया है।

15 अगस्त: स्वच्छता का महोत्सव भी

कम्पोस्ट बूस्टर: सरल, सुलभ और पर्यावरण अनुकूल समाधान कम्पोस्ट बूस्टर एक जैविक उत्पाद है, जिसे विशेष रूप से रसोई से निकलने वाले कचरे को जल्दी और प्रभावी ढंग से कंपोस्ट (खाद) में बदलने के लिए तैयार किया गया है। यह उत्पाद न केवल सड़ने की प्रक्रिया को तेज करता है, बल्कि गंध को भी कम करता है और तैयार खाद को पोषक तत्वों से भरपूर बनाता है। स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा का संदेश आत्मनिर्भरता ही सच्ची आज़ादी है स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा ने यह दिखाया है कि अगर हर संस्था और हर घर अपनी ज़िम्मेदारी खुद उठाए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ जीवनशैली की ओर एक ठोस कदम भी है।

इस स्वतंत्रता दिवस पर, सभी स्टेशन हेड क़्वार्टर होल्टा से प्रेरणा लें और अपने घरों, संस्थानों और मोहल्लों में कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी खुद उठाएं। कम्पोस्ट बूस्टर जैसे उत्पादों का उपयोग कर हम जैविक कचरे को भी एक अवसर में बदल सकते हैं एक हरियाली, आत्मनिर्भरता और सच्चे स्वराज के अवसर में।

आइये 15 अगस्त पर हम सब मिलकर ये संकल्प लेते है:-

- कचरा खुले में न फेंकें।
- गीले और सूखे कचरे को अलग करें।
- रीसायकल योग्य वस्तुओं का पुन: उपयोग करें।
- प्लास्टिक का उपयोग कम करें।
- अपने घर, गली, मोहल्ले और स्कूल को साफ़ रखें।
- दूसरों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करें।

स्वच्छ भारत सशक्त भारत आत्मनिर्भर भारत !

जगदीप सिंह

KARGIL VIJAY DIWAS
DEVANGANA GAIN, CLASS - VIII. B

Kolkata
WB 2808
TAXI
DEEPTANSHU GAIN
CLASS - VIII - B

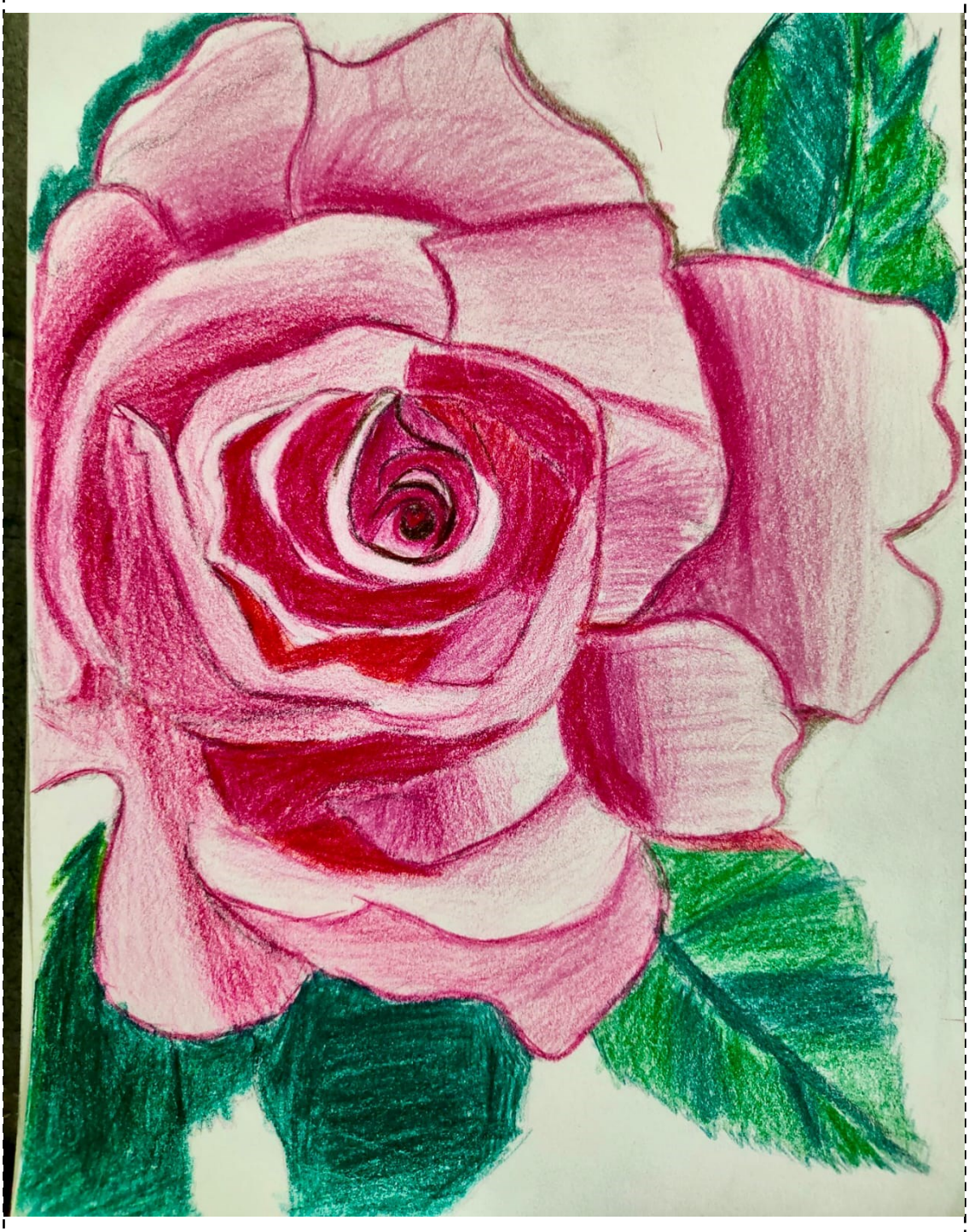

Arkita Kumari
Class-VI

Bhavika Gupta

Neharika Gupta

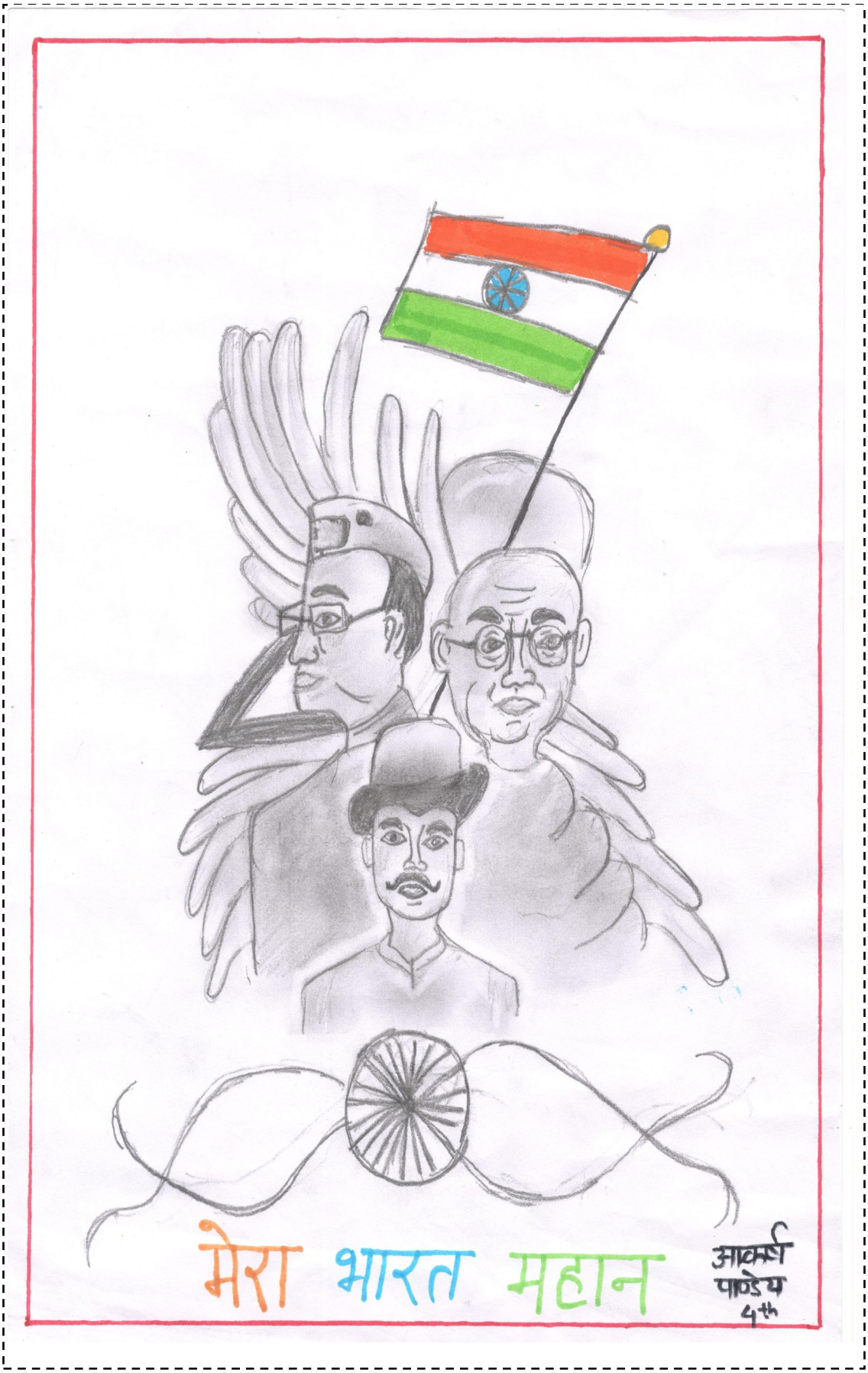
मेरा भारत महान
आकर्षी पाण्डेय
4th

Made by
Shreya Saini

Sarvik Saini

उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब

Innovation Hub for Better Tomorrow